माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
पशु पालन	4 3 0	हिन्दी

[redacted]

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक A- 0705955

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

	2	8	2	1	3	2	0	7	5

शब्दों में

	दो	आठ	दो	एक	तीन	दो	शून्य	सात	पाँच

उदाहरणार्थ

1	1	2	4	3	9	5	6	8
एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में X शब्दों में X

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 06

ग :– परीक्षा का दिनांक 22 03 2018

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्डरी सर्टि० परीक्षा केन्द्र क्र. 212027

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा | परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

EM 3518718

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

प्राप्तांक शब्दों में | कुल प्राप्तांक अंकों में

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 1 का उत्तर *

(i) बैक्टीरिया

(ii) बीकानेरी

(iii) 0.5%

(iv) 26%

(v) मुर्गी से

* प्रश्न क्रमांक 2 का उत्तर *

(i) थनैला

(ii) 150 दिनों का

(iii) स्वेन

(iv) फिल्टर पासिंग वायरस

(v) 2006

BSE

मध्यप्रदेश
SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 3 का उत्तर *

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) सत्य

सत्य

B
S
E

* प्रश्न क्रमांक 4 का उत्तर *

(i) गल घोंटू — पाश्चुरेल्ला बॉवीसेप्टिका

(ii) N.D.R.I. → करनाल

ीय डेयरी विकास बोर्ड → 1965

तीय डेयरी निगम → 1970

(v) पिंजरा पद्धति → मुर्गीगृह

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 5 के अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 5 का उत्तर *

महली के परिपूरक आहार के प्रकार निम्नलिखित हैं।

(i) जंतु संबंधित परिपूरक आहार।

(ii) वनस्पति संबंधित परिपूरक आहार।

* प्रश्न क्रमांक 6 का उत्तर *

शूकर के विषाणु जनित एवं जीवाणु जनित रोग निम्न हैं।

विषाणु जनित रोग :- चेचक, पक्षाघात, खुरपका-मुंहपका।

जीवाणु जनित रोग :- एन्थ्रेक्स, शूकरज्वर, जुकाम।

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 7 का उत्तर *

जमनापारी	बरबरी
1. इसे सुन्दर बकरी के नाम से जाना जाता है।	1. इसे शहरी बकरी के नाम से जाना जाता है।
2. इस नस्ल के नरो मे दाढ़ी पायी जाती है।	2. इस नस्ल के नरो मे दाढ़ी नही पायी जाती है।
3. ये लंबे कद की होती है।	3. यह छोटे कद की होती है।

* प्रश्न क्रमांक 8 का उत्तर * (अथवा)

क्रीम पकाना की परिभाषा :- क्रीम को पकाने के में डालने से लेकर बटर चर्नर में डालने के समय की क्रिया को क्रीम पकाना कहते है।

ONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYE ESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOF ADHAYPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MAD

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 9 का उत्तर *

पशु शरीर मे कैल्शियम के निम्न लिखित है।

(i) यह हड्डियों के निर्माण में सहायक होते हैं।

(ii) यह रक्त का थक्का बनाने में मदद करते हैं।

(iii) यह टूटे फूटे ऊतकों की मरम्मत करते हैं।

(iv) यह कंकाल तंत्र के निर्माण मे सहायक होते हैं।

यह मांस पेशियों को मजबूत बनाते हैं।

* प्रश्न क्रमांक 10 का उत्तर *

साइलेज के निम्नलिखित लाभ हैं।

(i) हरे चारे की वर्ष भर उपलब्धता :- पशुओ को चारे केवल रबि व खरीफ ऋतु मे ही प्राप्त होते हैं लेकिन साइलेज तैयार करके वर्षभर पशुओं को हरा चारा खिलाया जा सकता है।

B
S
E

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOF

प्रश्न क्र.

(ii) कम स्थान की आवश्यकता :- चारों की अपेक्षा प्रयुक्त साइलेज कम स्थान घेरते हैं इनको बनाने के लिए अधिक स्थान की आवश्यकता नहीं होती है।

(iii) खेत शीघ्र खाली होना :- साइलेज बनाने वाली फसलों को फूल आने से पहले काट लिया जाता है जिससे खेत अगली फसल की बुवाई के लिए शीघ्र खाली हो जाता है।

(iv) साइलेज बनाने वाली फसलों के साथ खरपतवारों को काटकर भी चारे के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

प्रश्न क्र

CONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECO
EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MA

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 11 का उत्तर *

ऋतुमयी गाय के निम्नलिखित लक्षण हैं।

(i) गाय खाना-पीना कम कर देती है।

(ii) गाय बेचैन रहती है तथा खूंटे के चारो ओर चक्कर लगाती है।

(iii) गाय अन्य पशुओं पर चढ़ने का प्रयास करती है।

(iv) गाय अपनी पूँछ हिलाकर बेचैनी को प्रदर्शित करती है।

(v) गाय का दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है।

) गाय की योनी से गाढ़ा पीला सा तरल पदार्थ निकलने लगता है।

(vii) गाय बार-बार रम्भाती है।

BSE

BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCAT

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 12 का उत्तर *

एक उत्तम पशु जाँचकर्ता के निम्न लिखित हैं।

(i) जाँचकर्ता पशुपालक होना चाहिए।

(ii) जाँचकर्ता की पशु पालन मे विशेष रुचि होनी चाहिए।

(iii) जाँचकर्ता को पशु की नस्ल के विषय में पूरी जानकारी होनी चाहिए।

(iv) जाँचकर्ता पक्षपाती नही होना चाहिए।

(v) जाँचकर्ता द्वारा लिए गए फैसले पर दृढ़ होना चाहिए।

(vi) जाँचकर्ता को पशु की बाह्य व आंतरिक रचना का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

BSE

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 13 का उत्तर * (अथवा)

(i) बर्डिजोमास्ट्रेटर :- इसका उपयोग नर पशुओं को बधिया करने में किया जाता है।

(ii) थन-साइफन :- इस यंत्र का उपयोग पशुओं को थनैला रोग हो जाने पर थनों से ग्रसित दूध बाहर निकालने में किया जाता है।

(iii) प्रोब :- इस यंत्र का प्रयोग पशुओं के घावों की गहराई मापने में किया जाता है।

) ट्रोकार केन्युला :- इस यंत्र का अफरा रोग में पशुओं के पेट से गैस बाहर निकालने में किया जाता है।

BSE

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFS
ION,MADHAYPRADSEH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCA
मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 14 का उत्तर *

बीमार पशुओं मे निम्न लक्षण दिखाई देते हैं।

(i) सुस्त शरीर :- बीमार पशु सुस्त एवं उदास होकर एकांत मे खड़ा रहता है।

(ii) रूखी त्वचा :- बीमार पशुओ की त्वचा रूखी खुरदुरी हो जाती है तथा उनकी चमक चली जाती है।

(iii) दुर्गन्ध युक्त गोबर :- बीमार पशुओं के गोबर से दुर्गन्ध आने लगती है।

(iv) नाडीगति, श्वसन गति व तापक्रम में परिवर्तन :-

बीमार पशुओ की नाडीगति, श्वसन गति व तापक्रम में परिवर्तन या असामान्य हो जाता है।

(v) दुग्ध उत्पादन में कमी :- बीमार पशुओं की दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है।

B
S
E

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 15 का उत्तर *

पनीर के प्रकार	वसा की मात्रा
(i) चेड्डर पनीर	32 %
(ii) सूरती पनीर	37 %
(iii) परिशुद्ध पनीर	29 %
(iv) मृदु पनीर	23 %
(v) ढाका पनीर	38 %

BSE

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 16 का उत्तर *

कुल्फी	आईस्क्रीम
1. कुल्फी का संघठन अनिश्चित होता है।	1. आईस्क्रीम का संगठन निश्चित होता है।
2. इसमें हवा भरकर इसका आयतन नही बढ़ाया जा सकता है।	2. इसमें हवा भरकर इसका आयतन बढ़ाया जा सकता है।
3. इसमें पानी की मात्रा अधिक होती है।	3. इसमें पानी की मात्रा कम होती है।
4. इसमें वसा की मात्रा कम होती है।	4. इसमें वसा की मात्रा अधिक होती है।
5. यह एक हिमीकृत दुग्ध पदार्थ है।	5. यह एक हिमीकृत खाद्य पदार्थ है।
6. इसे बनाने की विधि सरल होती है।	6. इसे बनाने की विधि कठिन होती है।

BSE

योग पूर्व पृ

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 17 का उत्तर *

संघनित दूध के उपयोग निम्नलिखित हैं।

(i) संघनित दूध में पानी मिलाकर इसे साधारण दूध की तरह उपयोग किया जा सकता है।

(ii) संघनित दूध का प्रयोग चाय तथा कॉफि बनाने में किया जाता है।

(iii) संघनित दूध का प्रयोग बिस्किट तथा मिठाईयाँ बनाने मे किया जाता है।

(iv) संघनित दूध का प्रयोग शिशु आहार के रूप मे किया जाता है।

संघनित दूध का प्रयोग आईस्क्रीम बनाने मे किया जाता है।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 18 का उत्तर *

मुर्गी के अण्डे का रासायनिक संगठन –

	अवयव	प्रतिशत मात्रा
1.	पानी	73 %
2.	वसा	14 %
3.	प्रोटीन	13 %
4.	कैल्शियम	0.6 %
5.	कार्बोहाइड्रेट	0.5 %
6.	खनिज	1 %

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL
BSE

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 19 का उत्तर * (अथवा)

मुर्गी के आहार में विटामिन A, B, C, D, E के कार्य निम्न है।

(i) विटामिन A –: (i) यह प्रोटीन की मात्रा को बढ़ाता है।
(ii) मांस उत्पादन मे वृद्धि होती है।

(ii) विटामिन B –: (i) यह भूख बढ़ाने मे सहायक होता है।
(ii) यह हड्डियो के निर्माण मे सहायक है।

(iii) विटामिन C –: (i) यह स्कर्वी रोग से रक्षा करता है।
(ii) यह अंडा उत्पादन मे सहायक होता है।

(iv) विटामिन D –: (i) यह सूखा रोग से रक्षा करता है।
(ii) हड्डियों को मजबूत बनाता है।

(v) विटामिन E –: (i) यह जनन अंगो की क्रियाशीलता को बढ़ाता है।
(ii) यह हरी पत्तिया व हरी सब्जियो मे पाया जाता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSE

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक २० का उत्तर * (अथवा)

रानीखेत बीमारी का वर्णन

कारण ⇒ यह बीमारी पारामिक्सो वायरस द्वारा मुर्गीयों मे होती है।

लक्षण ⇒ (i) इस रोग मे मुर्गीयों की आँख व नाक से पानी जैसा पदार्थ निकलने लगता है तथा मुर्गीयाँ मुँह खोलकर सांस लेती हैं।

(ii) मुर्गीयों को बुखार आ जाता है तथा मुर्गीयों को बार-बार प्यास लगती है।

(iii) मुर्गीयों को पतले हल्के पीले बदबूदार दस्त लगने लगते हैं।

नियंत्रण ⇒ (i) रोगी मुर्गीयो को स्वस्थ मुर्गीयो से अलग रखना चाहिए।

(ii) मृत मुर्गीयों को जला देना चाहिए।

(iii) मुर्गीशाला की समय-समय पर साफ-सफाई करनी चाहिए।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उपचार → 100 ग्राम टेट्रासाइक्लिन प्रतिदिन आहार में मिलाकर देना चाहिए।

B
S
E